Result Mitra Daily Current Affairs

लाल सागर संकट और स्वेज नहर

हालिया संदर्भ :

- इजरायल-हमास के बीच शुरू हुआ संघर्ष अब विस्तृत रूप धारण कर चुका है, जिसमें हूती विद्रोही, हिज्बुल्लाह एवं ईरान भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से शामिल हो गया है।
- लाल सागर भी इस संघर्ष के केन्द्र में है, जहाँ बार-बार जहाजों पर हमले किये जा रहे हैं।
- ऐसी स्थिति में भारत का यूरोप को पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात स्वेज नहर के बजाय केप ऑफ गुड होप के माध्यम से हो रहा है, जो लंबा, महंगा लेकिन सुरक्षित मार्ग है।
- पिछले वर्ष के अंत से लाल सागर क्षेत्र में यमन के हूती विद्रोहियों द्वारा कई मालवाहक जहाजों को निशाना बनाया जा रहा है, जिसके पीछे हूती विद्रोहियों का तर्क है कि वे संघर्ष (गाजा-इजरायल) में इजरायल के सहयोगियों के जहाज को निशाना बना रहे हैं।

परिवर्तित निर्यात मार्ग :

महीना	स्वेज नहर (लाल सागर)	केप ऑफ गुड होप
मार्च	24.96	326.78
अप्रैल	0	384.02
मई	37.66	150.56
जून	0	277.98
जुलाई	0	276.24

- उपरोक्त मात्रा हजार बैरल प्रतिदिन में है।

परिवर्तित मार्ग का प्रभाव :

- स्वेज नहर के बजाय केप ऑफ गुड होप (COGH) मार्ग से भारत-यूरोप की मात्रा में 15-20 दिन अतिरिक्त लगता है, साथ ही माल ढुलाई की लागत में भी वृद्धि होती है।
- लाल सागर संकट से पूर्व भारत से यूरोप जाने वाले पेट्रोलियम टैंकर शायद ही COGH का मार्ग चुनते थे क्योंकि यह लगभग पूर्णतः लाल सागर-स्वेज नहर से संपादित होना था।
- मार्ग परिवर्तन के प्रभाव स्वरूप जुलाई-दिसम्बर (2023) एवं जनवरी-जून(2024) में यूरोप को निर्यात किये जाने वाले भारतीय पेट्रोलियम उत्पाद में 25% की कमी आई है।
- हाल के महीनों में यूरोप को भारत द्वारा निर्यात की जाने वाली पेट्रोलियम की मात्रा 2,50,000-3,00,000 बैरल प्रतिदिन हो गया है, जो दिसम्बर 2023 में 4,25,000 बैरल प्रतिदिन के सर्वाधिक उच्च स्तर से बहुत कम है।

बदलता स्वरूप :

- भारत पारंपरिक रूप से यूरोप के लिये ईंधन का स्त्रोत नहीं था, बल्कि यूरोप इस मामले में रूस पर निर्भर था, लेकिन यूक्रेन-रूस युद्ध के बाद स्वरूप में परिवर्तन आ गया।
- वर्तमान में भारत रूसी कच्चे तेल का सबसे बडा खरीददार है और इसकी एक बडी मात्रा यूरोप को निर्यात करता है।
- रूसी तेल का भारत द्वारा आयात अभी भी लाल सागर से ही होता है, जिसका प्रमुख कारण यह है कि ईरान रूस का साझीदार है और हूती विद्रोहियों को ईरान से निर्देश प्राप्त होता है।
- भारत को अधिकांश (40%) कच्चे तेल का आयाता स्वेज नहर से ही करना पडता है, जिसमें बडी मात्रा में रूसी कच्चा तेल शामिल है।
- दिसम्बर 2023 से पूर्व स्वेज नहर और लाल सागर से वैश्विक कच्चे तेल का 10% और वैश्विक पेट्रोलियम उत्पाद का 14% प्रवाह होता था, लेकिन वर्तमान में यह मात्रा काफी कम हो गया है, लेकिन रूसी कच्चा तेल एक अपवाद बना हुआ है।

स्वेज नहर :

- स्वेज स्थल संधि को कारक बनाया गया एक कृत्रिक जलमार्ग, जो भूमध्य सागर एवं लाल सागर को जोडता है।
- यह 121 मील (193km) लंबा है।
- 1859 में बनना प्रारंभ हुआ और पहली बार 17 नवंबर 1869 को चालू हुआ।

Result Mitra

- फ्रांसीसी व्यक्ति फर्डिनेंड डी लेसेप्स द्वारा नहर के निर्माण के लिये 'कंपनी डी स्वेज' का गठन किया गया था।
- इसने लंदन से अरेबियन सी की दूरी 8900 km तक कम कर दिया।
- पोर्ट सईद इसके उत्तरी सिरे पर तथा पोर्ट टेवफिक इसके दक्षिणी सिरे पर स्थित है।
- यहाँ से औसतन 56 जहाज/दिन गुजरते हैं।
- 1956 तक यह नहर ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी कंपनियों द्वारा संचालित किया गया था लेकिन 1956 में मिस्त्र के राष्ट्रपति जमाल अब्देल नासिर ने नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया, जिसके बाद 'स्वेज संकट' उत्पन्न हो गया।
- 1967 में 6 Day War (इजरायल VS अरब देश) के कारण यह 8 वर्षों तक बंद रहा एवं 1975 में पुनः खुला।
- वर्तमान में इसका प्रबंधन स्वेज नहर प्राधिकरण (मिस्त्र) द्वारा किया जाता है।

COGH :

- यह दक्षिण अफ्रीका के केप प्रायद्वीप पर स्थित है।
- यह मार्ग पूर्वी एशिया और यूरोप को अफ्रीका के दक्षिणी-पश्चिमी भाग से जोडता है।
- स्वेज नहर के शुरू हो जाने से इस मार्ग का परिचालन कम हो गया।
- इसकी खोज बार्थोलोमू डायस (पूर्तगाली) द्वारा वर्ष 1488 में किया गया था, जिसने इसका नामकरण "केप ऑफ स्टॉर्म" के रूप में किया था।

Result Mitra